इसलिए नियमों और विनियमों का कठोरता से पालन करते हैं जिसके कारण कार्य सम्पन्न होने में बहुत देरी हो जाती है। **वाल्टर बेजहॉट** ने कहा है कि, "यह एक अनिवार्य दोष है कि नौकरशाही अधिकारी परिणामों की अपेक्षा नियमित कार्य विधि की अधिक परवाह करते हैं।"[1]

बर्क ने नौकरशाही अधिकारियों के सम्बन्ध में कहा है कि, "वे कार्य की विषयवस्तु अथवा सार को कार्य के स्वरूप की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं मानते।" इसीलिए **वाल्टर बेजहॉट** ने कहा है कि, "वे कपड़ा तो काटते हैं परन्तु उन्हें शरीर का पता नहीं होता।"[2]

रेम्जे म्योर के अनुसार, "इस बात से ज्यादा आपत्ति नहीं होती कि काम नियमों और प्रक्रियाओं के अनुसार हो रहा है बल्कि आपत्ति इस बात से है कि अधिकारी नियमों और प्रक्रियाओं की धुन में इतने पागल और अन्धे हो जाते हैं कि उन्हें कार्यों की अनिवार्यता और महत्त्व का ध्यान ही नहीं रहता है।"

2. जनसाधारण के माँगों की उपेक्षा (Unresponsiveness for Public Demands)—नौकरशाही पर एक आरोप यह लगाया जाता है कि यह जनहित और जन-आकांक्षाओं को महत्त्व नहीं देती है। अपनी नौकरशाही, तानाशाही, लालफीताशाही प्रवृत्ति के कारण वह जनता के हितों की उपेक्षा करती है। यदि लोकमत जनहित के विरुद्ध है तो नौकरशाही उसकी उपेक्षा कर देती है। कई बार ऐसा होता है कि जनहित को ध्यान में रखकर सम्बन्धित विभाग का मन्त्री कोई घोषणा कर देता है लेकिन ये नौकरशाह नियमों, प्रक्रियाओं और वित्तीय आँकड़ों के माध्यम से उस घोषित योजना को अड़ंगा लगा देते हैं।

3. शक्ति के भूखे (Hungry of Power)—नौकरशाह शक्ति के भूखे होते हैं। चाहे उन्हें कितनी भी सत्ता और उनका कार्यक्षेत्र बढ़ा दिया जाये वे सदैव अधिक शक्ति और सत्ता प्राप्त करने के लिए उद्यत रहते हैं। वे शक्ति प्राप्त करने के लिए तो प्रयत्नशील रहते हैं लेकिन उत्तरदायित्व से बचना चाहते हैं। शक्ति प्राप्त की होड़ में वे जनहित को भुला देते हैं।

4. साम्राज्य रचना (Empire Building)—नौकरशाही के कारण सरकार के कार्य अलग-अलग विभागों में और विभाग इकाइयों में बँटा होता है। इन इकाइयों में अपने आपको स्वतन्त्र तथा पृथक् इकाई मानने की प्रवृत्ति पनप रही है। आज यह कहावत कही जाने लगी है विभाग का अधिकारी अपने को 'विभाग का राजा' और क्लर्क (Clerk) अपने आपको 'ऑफिस की रानी' समझता है। यदि ये राजा-रानी तय कर लें तो कोई भी काम मिनटों में हो सकता है और यदि वे काम न करना चाहें तो महीनों का समय भी कम है। आज सामान्यतया यह मान्यता बन गयी है कि यदि सरकारी विभाग में काम कराना है तो राजा, रानी दोनों को 'चढ़ावा' देना होगा।

5. रूढ़िवादी दृष्टिकोण (Conservative Approach)—नौकरशाहों की प्रवृत्ति रूढ़िवादी होती है। वे यथास्थिति के पक्षधर होते हैं और नवीनता तथा परिवर्तन के विरोधी होते हैं। **बर्ट्रेण्ड रसेल** के अनुसार, "नौकरशाही में प्रत्येक स्थल पर एक निषेधात्मक मनोविज्ञान को, जिसका झुकाव निरन्तर निषेधों की ओर रहता है, विकसित करने की प्रवृत्ति पायी जाती है।"

6. निरंकुशता (Despotism)—जिस प्रशासन पर कोई अंकुश न हो उसे निरंकुश प्रशासन कहा जाता है। **लॉर्ड हेवर्ट** (Lord Hewart) ने अपनी पुस्तक 'New Despotism' में लिखा है कि, "ब्रिटेन के नागरिक बढ़ती प्रशासनिक निरंकुशता के बोझ तले अपनी स्वतन्त्रता को खो देंगे।" उन्होंने आगे लिखा है कि, "प्रशासन काल में विशेषज्ञ स्थायी अधिकारी ही होते हैं जो प्राचीन और निषेधात्मक गुणों का प्रदर्शन करते हैं। वे अपने आपको सिर्फ महान् कार्यों के योग्य समझते हैं।" प्रदत्त विधायन द्वारा विधायिका द्वारा भेजे गये कानूनी ढाँचे (Legal Structure) में वे उन सभी नियमों को रखना चाहते हैं जिससे भविष्य में उनको अपनी मनमानी करने का अवसर मिल सके। इसीलिए इंग्लैण्ड के लॉर्ड चीफ जस्टिस हेवर्ट ने नौकरशाही की बढ़ी हुई शक्ति को नवीन निरंकुशता (New Despotism) की संज्ञा दी है।

1 "It is an inevitable defect that bureaucrats will care more for routine than for results."
—*Walter Bagehot*

2 "......They cut the clothes, but do not find the body."
—*Walter Bagehot*

Scanned with CamScanner